अनुभव कहता है खामाशियां ही बेहतर है क्योंकि शब्दों से लोग रूठते है।
– अज्ञात

बयानबाजी और खींचतान दुर्भाग्यपूर्ण

ऐसा कोई बयान न दें, जिससे समाज में विभाजन की आशंका बढ़े। उधर बंगाल में राहत कार्यों को भुनाने की होड़ का भी गलत संदेश जा रहा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के राहत सामग्री बांटने का सोशल मीडिया पर खूब प्रचार किया गया।

अनुप नेगी।

अभी जब देश में कोरोना वायरस का प्रकोप बढ़ रहा है, तब इसे लेकर राजनीतिक दलों के नेताओं–कार्यकर्ताओं की बयानबाजी और खींचतान दुर्भाग्यपूर्ण है। जब से तबलीगी जमात के बहुत सारे लोगों के कोरोना से संक्रमित होने की खबर आई है, तभी से कुछ नेता–कार्यकर्ता इसे सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश कर रहे हैं। कहा जा रहा है कि समुदाय विशेष का एक तबका जान–बूझकर कोरोना फैला रहा है। इसे कोरोना जिहाद तक कह दिया गया। राजनीति का हाल यह है कि हरियाणा के स्वास्थ्य एवं गृह मंत्री अनिल विज ने कोरोना की आड़ में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी और राहुल गांधी पर निजी कमेंट किए। उन्होंने कहा कि इटली के लोग ताली बजाकर और मोमबत्तियां जला कर अपने देश की एकता को प्रदर्शित कर रहे, मगर भारत में इटली वाली के बच्चे इसका विरोध कर रहे हैं।

यह अच्छी बात है कि बीजेपी आलाकमान ने सांप्रदायिक बयानबाजी को लेकर सख्त रुख अपनाया है। पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी के नेताओं से कहा है कि वे कोरोना महामारी को सांप्रदायिक रंग न दें। ऐसा कोई बयान न दें, जिससे समाज में विभाजन की आशंका बढ़े। उधर बंगाल में राहत कार्यों को भुनाने की होड़ का भी गलत संदेश जा रहा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के राहत सामग्री बांटने का सोशल मीडिया पर खूब प्रचार किया गया। बीजेपी का आरोप है कि जब उनके नेताओं ने राहत सामग्री बांटने की कोशिश की तो पुलिस ने उन्हें मना कर दिया। सत्तारूढ़ टीएमसी इस आरोप से इनकार कर रही है। उसका कहना है कि बीजेपी नेता सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान नहीं रख रहे।

बीजेपी की दलील है कि ममता बनर्जी कोरोना को अगले चुनावों में भुनाना चाहती हैं। इसी तरह पिछले दिनों दिल्ली और यूपी सरकार के बीच परस्पर आरोप–प्रत्यारोप के कई दौर चले। प्रधानमंत्री के एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए सुझाए गए प्रतीकात्मक उपायों में भी कई लोगों ने राजनीतिक आशय ढूंढ लिए। इसके सांकेतिक महत्व को स्वीकार करने के बजाय सत्ताधारी दल के नेताओं ने इसे राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन का अभियान बना डाला और ताली–थाली बजाने या दीया जलाने के दौरान कुछ लोगों ने राजनीतिक नारे भी लगाए। दरअसल नरेंद्र मोदी ने यह आह्वान किसी राजनीतिक दल के नेता के रूप में नहीं बल्कि पूरे देश के अभिभावक के रूप में किया था और अभी के माहौल में ऐसी हर अपील को इसी रूप में लेने की जरूरत है। वे देश के मुखिया हैं और सारे राजनीतिक प्रतिनिधियों को, चाहे वे किसी भी दल के हों, अभी उनके सहयोगी की भूमिका निभानी चाहिए।

यह वक्त आपसी मतभेदों को भुलाने का है, भुनाने का नहीं। लॉकडाउन के बाकी बचे दिन बेहद संवेदनशील हैं और जिस बड़े संकट का सामना हम कर रहे हैं, वह अभी ठीक से सामने भी नहीं आया है। कोरोना वायरस हिंदू–मुस्लिम नहीं देखता। हमें मिलकर उसका मुकाबला करना होगा। पहले समाज और देश को बचाएं, राजनीति बाद में होती रहेगी।

दिनचर्या का अंग

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

आज की दिनचर्या में हाथ मिलाकर अभिवादन और स्वागत करने की पश्चिमी परंपरा के स्थान पर दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन–स्वागत की भारतीय जीवनशैली अपनाने को पूरा विश्व मजबूर हुआ है, क्योंकि यह वैज्ञानिक और उपयोगी है। पैर–हाथ धोकर और शुद्धीकरण के बाद ही धार्मिक अनुष्ठान करने तथा शौचालय से निकलकर स्नान करने की भी परंपरा रही है। हाथ–पैर धोकर ही भोजन करना और बाद में भी उसी तरह हाथ–पैर धोकर दूसरे काम करने की प्रक्रिया दैनिक जीवन में मान्य है। कोरोना के संकट से भारतीय जीवन–पद्धति की महत्ता भारत में ही नहीं, पूरी दुनिया में नए सिरे से स्थापित हुई है। गंभीर बीमारी की दशा में भी बीमार व्यक्ति को अलग–थलग रखने और उसके उपचार में लगे व्यक्ति को भी अन्य लोगों से दूर रखने की हिदायत का पालन आज भी भारतीय जीवनशैली में अनिवार्य है।

संपादकीय

महत्वपूर्ण भूमिका

किसी भी महामारी को रोकने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका स्वास्थ्यकर्मियों की होती है लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे देश में स्वास्थ्यकर्मियों की भारी कमी है, विशेष रूप से डॉक्टर्स और नर्सों की। इटली को इसी कारण चीन, क्यूबा और अन्य देशों से स्वास्थ्य दल बुलाने पड़े। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को राष्ट्रीय स्तर पर दो टीमें बननी चाहिए, जिसमें सरकारी और निजी क्षेत्र के विशेषज्ञ शामिल हो सकते हैं। एक मेडिकल टीम, जिसमें संक्रामक रोग विशेषज्ञ, श्वसन रोग विशेषज्ञ और जनरल फिजिशियन हों। दूसरी टीम आईसीयू टीम हो, जिसमें एनेस्थेसियोलॉजिस्ट और गहन चिकित्सक हों। इस आईसीयू टीम की प्राथमिकता सरकारी और निजी अस्पतालों में बुनियादी ढांचे, एनेस्थिसियोलॉजिस्ट, इंटेंसिविस्ट, पल्मोनोलॉजिस्ट, आईसीयू प्रशिक्षित नर्स और जूनियर डॉक्टरों के साथ आईसीयू देखभाल के लिए मानवीय संसाधनों की उपलब्धता का जायजा लेना हो। सरकार के फैसले इन दोनों टीमों की सलाह पर आधारित होने चाहिए।

भारत में अभी आईसीयू बेड और वेंटिलेटर–सुसज्जित बिस्तरों की संख्या पर्याप्त है। वर्तमान में 30–50 हजार वेंटिलेटर और 70 हजार से 1 लाख आईसीयू बेड होने का अनुमान है। सरकार को इसे तुरंत विस्तारित करने की जरूरत है। ट्रेकोस्टॉमी और लो–कॉस्ट वेंटिलेटर का उपयोग एक विकल्प हो सकता है। एम्स और आईआईटी के वैज्ञानिकों द्वारा सस्ते और गुणवत्ता युक्त वेंटिलेटर के प्रोटोटाइप बनाए गए है। सरकार को इनके उत्पादन को शीघ्रता से बढ़ाना चाहिए। ऑक्सीजन और गैर–आक्रामक सकारात्मक दबाव वेंटिलेशन (जैसे सीपीएपी) की आवश्यकता है।

भारत की टेस्टिंग दर अभी भी विश्व में तकरीबन सबसे नीचे है। सरकार को अधिक से अधिक टेस्टिंग करनी चाहिए ताकि हम समय पर पॉजिटिव मरीजों का पता लगा सकें।

लॉकडाउन सबसे निर्णायक उपाय

डॉ. महावीर गोलेच्छा।

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में दहशत पैदा कर दी है। वायरस के प्रसार को रोकने के लिए कई देशों ने कड़े निर्णय लिए हैं। भारत सरकार ने भी कई महत्वपूर्ण और साहसिक कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दूसरे देशों द्वारा कोरोना संक्रमण को रोकने के प्रयासों और विशेषज्ञों द्वारा बताए गए उपायों को ध्यान में रखते हुए पूरे देश में 21 दिन का लॉकडाउन घोषित किया। महामारी विज्ञान और स्वास्थ्य नीति विशेषज्ञों के अनुसार भारत जैसे देश की सामाजिक और भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए कोरोना के संक्रमण को रोकने के लिए लॉकडाउन सबसे उचित और निर्णायक उपाय है। 21 दिन के लॉकडाउन से कुल केस 60 से 70 प्रतिशत कम होंगे।

इटली, इंग्लैंड और अमेरिका ने पूर्ण लॉकडाउन के बारे में फैसले लेने में बहुत लंबा समय लिया और अब वे इसका परिणाम भुगत रहे हैं। निश्चित रूप से लॉकडाउन कोरोना नियंत्रण में काफी कारगर साबित होगा, लेकिन इसके अलावा भी सरकार को महामारी से निपटने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। अभी कई और ठोस कदम उठाने होंगे क्योंकि महामारी–विज्ञान के मॉडलों के अनुसार अप्रैल अंत या मई की

शुरुआत से भारत में कोरोना के मामलों में तेजी से वृद्धि हो सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी कहा है कि कोरोना से लड़ने के लिए लॉकडाउन के साथ–साथ सामुदायिक स्वास्थ्य प्रयासों को भी आगे बढ़ाना जरूरी है। भारत की टेस्टिंग दर अभी भी विश्व में तकरीबन सबसे नीचे है। सरकार को अधिक से अधिक टेस्टिंग करनी चाहिए ताकि हम समय पर पॉजिटिव मरीजों का पता लगा सकें। उन्हें आम जन से दूर करके ही हम संक्रमण को फैलने से रोक सकते है।

केंद्र और राज्य सरकारों को कोरोना को नियंत्रित करने के लिए समन्वय बढ़ाते हुए 5–6 महीनों के लिए योजना बनानी चाहिए। इंग्लैंड की तरह सरकार को कोरोना के मरीजों के इलाज के लिए बड़े शहरों में स्थित एम्स, मेडिकल कॉलेज अस्पतालों, क्षेत्रीय अस्पतालों और अन्य बड़े संस्थानों को पूरी तरह से कोविड स्वास्थ्य संस्थानों में बदल देना चाहिए, क्योंकि अन्य मरीजों और कोरोना मरीजों का साथ में इलाज करने से सामान्य मरीजों में संक्रमण का खतरा बढ़ता है। इन संस्थानों में इंटेंसिव केयर यूनिट के लिए आवश्यक समस्त सुविधाएं होनी चाहिए, जैसे वेंटिलेटर चलाने के लिए पाइप्ड ऑक्सीजन, सक्शन और कॉम्प्रेस्ड हवा की आपूर्ति, संक्रमण नियंत्रण साधन और संसाधनों को सक्रिय रखने के लिए जरूरी बाकी सभी उपकरण।

इसके अलावा सुविधायुक्त बड़े जिला अस्पतालों को भी कोविड स्वास्थ्य केंद्रों में बदला जा सकता है। सरकार को निजी क्षेत्र के अस्पतालों को भी साथ में जोड़ने की जरूरत है। साथ ही आइसोलेशन के लिए पर्याप्त इंतजाम करने चाहिए। निजी क्षेत्र के होटल और सामाजिक–धार्मिक संस्थानों द्वारा संचालित धर्मशालाओं का इसके लिए उपयोग किया जा सकता है। काफी बड़े अस्पतालों में निजी सुरक्षा उपकरणों– मास्क, गाउन और दस्तानों की कमी पाई गई है। इटली और अन्य देशों में स्वास्थ्यकर्मी इन चीजों की कमी के कारण ही संक्रमित हुए। इनकी उपलब्धता सुनिश्चित नहीं करने से स्वास्थ्यकर्मियों की कमी हो सकती है, जिससे संक्रमित मरीजों की संख्या और समस्या दोनों बढ़ जाएगी। सरकार को निजी कंपनियों को आर्थिक सहायता देकर निजी सुरक्षा उपकरणों का उत्पादन तेज करने की जरूरत है। स्वास्थ्य कर्मचारियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

अष्टयोग-5010

	7	2				1
3	33	1	25	6	28	
		5			2	7
1	32		35	4	32	
2		7		5		3
	33	3	33		41	
6			1	2		5

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5009 का हल

3	6	1	4	7	2	5
6	36	6	32	2	27	1
5	2	7	4	1	6	3
4	33	4	32	4	31	4
1	7	3	4	5	6	2
7	34	2	29	6	39	7
2	7	5	1	3	4	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

दवाओं का उत्पादन

मोहन। कोरोना के इलाज के लिए अभी कोई मेडिसिन उपलब्ध नहीं है, लेकिन कोरोना संक्रमित मरीजों के लक्षणों को कम करने और उन्हें ठीक करने के लिए पैरासिटामॉल, हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन, एंटीबायोटिक, एंटीवायरल और अन्य मेडिसिन की जरूरत पड़ती है। सरकार को इनका उत्पादन बढ़ाकर या आयात करके इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। यह क्षमता टियर–1 मेट्रो अस्पतालों के बाहर अपर्याप्त है। पश्चिमी यूरोप, में काफी रोगियों की मृत्यु ऑक्सीजन की आपूर्ति अपर्याप्त होने के कारण हुई। अतिरिक्त कार्डियक मॉनिटर, वेंटिलेटर और सिरिंज पंप स्थानीय स्तर पर बनें या आयात किए जाएं। सरकार इनकी थोक खरीद करे। कोरोना मरीज बढ़ने की स्थिति में स्टॉक जल्द ही समाप्त हो जाएगा। वेंटिलेटर कोरोनोवायरस से होने वाली मौतों को रोकने के लिए सबसे जरूरी चीज है। इस वैश्विक महामारी के दौर में भी गरीबों–वंचितों का ख्याल उतना ही रखा गया जितना सरकारों की यूएसपी के लिए जरूरी है।